गुणवत शिक्षा - सभी के लिए

शिक्षा, गरीबी और शहरी बच्चे पर विचार-विमर्श सभाओं की एक श्रंखला

एक कथा-IHC-NIUA प्रस्ताव

सिद्धांत टिप्पणी

बच्चा और शहरीकरण

आज संसार तेज़ी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है, और इसके साथ-साथ नगरों में इस विकास के लिए आवश्यक साधन और सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए प्रयत्न जारी है. मांग और पूर्ति का अंतर समाज के असुरक्षित वर्ग को प्रतिकूल रूप से सबसे ज़्यादा प्रभावित करता है, ख़ासकर गरीब समुदायों की औरतों और बच्चों को. अकेले दिल्ली की ही आधी से ज़्यादा जनसंख्या गन्दी बस्तियों में रहती है, जिसमे 47% 4 से 14 साल के बच्चे हैं. ये वो बच्चे हैं जिनमे आगे चलकर नेतृत्व और सक्रिय नागरिक बनने की योग्यता है, पर जो उचित देखभाल और ध्यान के अभाव में इस दयनीय गरीबी से शायद कभी उभर न पाएं. हमें पूरा विश्वास है कि शिक्षा द्वारा ये बच्चे अपने समुदायों में चिरस्थायी आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन व पुनरुत्थान लाने में नेत्रत्व कर सकते हैं.

शिक्षा और गरीबी का सम्बन्ध

उपस्थित दिल्ली में, स्कूल न जाने वाले बच्चों में गरीब बच्चों की संख्या अधिक है. दिल्ली नगरनिगम स्कूलों के 15% से ज़्यादा बच्चे कक्षा 5 तक स्कूल छोड़ देते हैं, और नियमित रूप से स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या और भी ज़्यादा है. लिंगभेद के कारण सबसे अधिक असमानता है जो अभी भी लड़कों के पक्ष में है. गन्दी बस्तियों में रहने वाले अधिकतर बच्चे या तो स्कूल छोड़ देतें हैं, या नियमित रूप से स्कूल नहीं जाते. क्योंकि उनके परिवारवाले उन्हें काम करने भेज देते हैं, या उन्हें अपने छोटे बहन-भाइयों की देखभाल में लगा देते हैं. ऐसे ही अनेक कारणों की वजह से इन बच्चों के लिए या तो स्कूल उपलब्ध नहीं है, या उन्हें आकर्षित नहीं करते. इन्ही में कुछ बुनियादी सुख-सुविधायों के अभाव, जैसे कि स्वास्थ्य, शौचालय और शारीरिक सुरक्षा महत्वपूर्ण कारण है. और जो भी बच्चे स्कूल जा रहें हैं संभवतः अच्छी शिक्षा नहीं ले पा रहे हैं, और बहुत से बच्चे ठीक से पढ़-लिख भी नहीं सकते.

क्रियाशीलता लाना

ग़रीबी के विस्तृत मूल्यांकन से ही हम भारत के बच्चों पर ग़रीबी के प्रभाव को पूरी तरह जान और समझ सकते हैं.
इस सम्मेलन श्रृंखला के बैठकों का उद्देश्य है गरीबी और शहरीकरण के कई अलग लेकिन एकीकृत मुद्दों को संबोधित करना, और जिस तरह वे बच्चों को प्रभावित करते हैं, ख़ासकर दिल्ली में काम करने वाले और सड़कों पर रहने वाले बच्चे. स्थानीय और विशेषज्ञ ज्ञान के संयुक्त शक्ति और साझेदारी के साथ, गहराई में चर्चा के माध्यम से हम ठोस कार्यान्वयन और सतत कार्यवाही पर पहुंचने की उम्मीद करते हैं.

प्रत्येक बैठक महिलाओं, युवाओं और बच्चों के साथ समुदाय स्तर पर ध्यान केंद्रित समूह-चर्चा से आगे बढ़ती है. इन सभी की चिंताओं और अनुभवों को समुदाय के सदस्यों द्वारा समाज के बड़े वर्ग, शिक्षक और अन्य विशेषज्ञों के सामने चर्चा और परामर्श के लिए लाया जाता है. परामर्श के सलाह और विचारों से 50 झुग्गी समुदायों में कार्य प्रत्यक्ष कार्यवाही के लिए आगे बढ़ाया जाएगा. प्रभाव और परिणाम को अगले परामर्श की बैठक में वापस लाया जाएगा. साइट का दौरा सदस्य सलाहकारों द्वारा 8 जनवरी को पहली बैठक के बाद शुरू किया जायेगा.

यह श्रृंखला बुनियादी सुविधाओं और समुदाय के मुद्दों पर चर्चा के साथ शुरू होती है:

1. सुरक्षित पानी, स्वच्छता और बच्चा

2. स्वास्थ्य, पोषण और बच्चा

3. आर्थिक सुरक्षा, आश्रय और बच्चा

4. संपूर्ण जीवन-स्तर और बच्चा > पिछले मंत्रणों का पुनरीक्षण

5. सभ्यता, परम्परा और बच्चा

6. पर्यावरण और बच्चा

ये श्रृंखला दो बैठकों से समाप्त होगी जो ऊपर दिए चर्चाओं के परिणामों को बच्चा, कक्षा और व्यवसाय से जोड़ेंगे:

7. उद्दमिता, आई.टी. और व्यावसायिक कौशल का विकास, और उनका ग़रीबी पर प्रभाव

8. पूर्व-नर्सरी से कक्षा 12 से कॉलेज तक. चुनौतियाँ, कमियाँ और समाधान

श्रृंखला के प्रत्येक बैठक का स्पष्ट संबंध होगा बच्चे की शिक्षा के साथ एक शहरी संदर्भ में.

उद्देश्य और परिणाम

निम्नलिखित समूहों के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत और सच्चे संवाद के लिए एक साझा मंच प्रदान करना: बच्चों, किशोरों, दिल्ली मलिन बस्तियों से स्त्रियों और पुरुषों, नगर निगम और राज्य सरकार, शहरी योजनाकारों, समुदाय प्रधानों, दिल्ली नगर निगम और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों, अधिकारियों, गैर-लाभ कार्यकर्ताओं, और शैक्षणिक संस्थानों के विद्वानों के लिए.

- शहरी बच्चे की ज़रूरतों पर ध्यान केंद्रित करना और उसके आधार पर नीति सिफारिशों के साथ एक रिपोर्ट का निर्माण करना, उन मुद्दों का संबोधन करने के लिए जिनका ये समूह सामना करती है, और वे मुद्दे जो 'शिक्षा का अधिकार' बिल द्वारा पूरी तरह संबोधित नहीं किये गए हैं.
- मलिन बस्तियों में रहने वाले बच्चों के जीवन को सुधारना, और गुणवत्ता, सतत शिक्षा को मापे जा सकने वाले और कार्रवाई अनुसंधान तकनीकों एवं ठोस मायनों द्वारा बढ़ाना.
- **अपेक्षित अंतिम उत्पादन**: सभी बच्चों के लिए बेहतर और अधिक न्यायसंगत शिक्षा, जिसकी शुरुआत, इन मंत्रनाओं के क्रमागत फलस्वरूप, 31 मार्च को आरंभ होने वाले एक अल्पकालीन कार्यक्रम से होगी.

साझेदार

कथा एक "प्रोफिट-फॉर-आल"® सर्व-हित सार्वजनिक संस्था है जो उच्चतम शिक्षा, सामुदायिक काम और प्रकाशन द्वारा सामाजिक न्याय पर प्रभाव डालने में प्रयत्नशील है.

इंडिया हैबिटाट सेंटर, आई.एच.सी. की कल्पना की गई थी एक ऐसे परिवेश के रूप में जो एक उत्प्रेरक सिद्ध हो विभिन्न आवास-सम्बंधित क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों और संस्थानों को एक सहक्रियात्मक सम्बन्ध में जोड़ने के लिए, और अतः जो उनके संपूर्ण कार्यसाधकता को चरण सीमा तक ले जा सके.

नैशनल इन्स्टिट्युट ऑफ़ अर्बन अफ्फैर्ज़, एन.आई.यू.ए. शहरी विकास एवं संचालन के क्षेत्र में अनुसन्धान, प्रशिक्षण और जानकारी के प्रसार के लिए कार्यरत एक सर्वश्रेष्ठ संस्थान है.

भाग लेने के लिए अथवा हमारे किसी भी अध्ययन समुदाय का मुआइना करने के लिए के लिए कृपया संपर्क कीजिए
वंदना पौल से hamaragaon@katha.org पर, अथवा मारिएल अम्हैन से kalpana@katha.org पर.